vii paper

Q.B

मालव के सिक्के

Coins OF MALVAS

मालव एक प्राचीन जाति थी जो भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग में निवास करती थी। ई० पू० तीसरी शताब्दी यूनानी लोगों ने इसे मैलोई (Malloi) कह कर पुकारा। सिकन्दर से भी मालव लोगों का सामना हुआ था। बाद में विदेशियों के दबाव से इन लोगों ने वर्तमान राजपूताने में अपना निवास स्थापित किया। यहाँ के लोग प्रथम सदी ई० पू० तक स्वतंत्रतापूर्वक प्रजातान्त्रिक रूप से राज्य करते रहे। समुद्रगुप्त के समय यह जाति मध्य भारत में निवास करती थी। इस जाति के वहाँ निवास के कारण उस स्थान का नाम 'मालव' हो गया। 57 B.C. को मालव सम्वत् कहते हैं।

Period of Malvas

एक इतिहासकार के "Cunnigho" के अनुसार मालवगण का काल 300 B.C. से 350 A.D. तक था। 350 ई० के बाद मालवगण की कोई मुद्रा नहीं मिली है और इसी समय अपनी स्वतंत्रता खोकर समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली थी। इस बात की पुष्टि समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति (The Allahabad Pillar Inscription) से भी होता है। सतलज से नर्मदा तक के भू-क्षेत्र में मालव ताम्र मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं। तीसरी सदी के बहुत से सिक्के जयपुर नगर के "नागर" स्थान में मिले हैं। ये सिक्के आकार में बहुत छोटे हैं। इनकी प्राचीन मुद्राएँ नये मुद्राओं की अपेक्षा बड़ी हैं। इनके सबसे छोटे सिक्के की तौल 1.5 ग्रेन है जो कि संभवतः संसार का सबसे छोटा सिक्का है।

मालव के सिक्के :⟶

मालवगण के सिक्के को हम मुख्यतः दो भागों में बाँट सकते हैं।

I. पहले प्रकार के सिक्के पर केवल जाति का नाम "मालवनाम जयः" या जयमालवानाम अंकित है।

II. दूसरे प्रकार के सिक्कों पर संभवत् मालव जाति के प्रमुखों के नाम अंकित हैं परन्तु इस विषय में विभिन्न विद्वानों में मतभेद है। V.A. Smith इसे विदेशी शासकों द्वारा चलाया गया सिक्का मानते हैं। जबकि ~~Dou~~ Douglas

और Chakraborathy इसे मालव-राजाओं द्वारा चलाया गया सिक्का ही मानते हैं। Dr. D.C Sarkar and Allan के अनुसार इन सिक्कों पर भी "मालवानाम जय" लिखने का प्रयोग किया गया। Dr. Chatopadhyay भी इन्हीं के विचारों का ही समर्थन करते हैं। इन सिक्कों के बारे में विद्वानों में मतभेद है। उस पर गोजर, मजुप तथा महाराय आदि का नाम मिलते हैं।

1. गोलाकार :→

मालवगण के जितने भी सिक्के मिले हैं सभी ताम्बे के ही बने हैं। ई० पू० के गोलाकार सिक्कों के अग्रभाग पर घेरे में बोधी-वृक्ष बना हुआ है। ब्राह्मी लेख "मालवनाम जय" उत्कीर्ण है। जो उपाधियाँ आगनारायण तथा यौधेयगणों के सिक्कों पर अंकित उपाधियों के समान है। पृष्ठभाग पर सांप और उसके प्रतिकात्मक चिन्ह दिखाई पड़ते हैं। कुछ सिक्कों के पृष्ठभाग पर खड़ा सिंह की मूर्ति नन्दी तथा राजा का सिर इत्यादि की आकृतियां पाई जाती हैं परन्तु प्रायः सभी सिक्कों के अग्रभाग पर बोधि-वृक्ष तथा ब्राह्मी अक्षरों में लिखा लेख मिलता है।

11. चौकोर → उसके अलावे मालवगण के दूसरे प्रकार के सिक्के चौकोर ढंग से बने सिक्के मिले हैं। इस प्रकार के सिक्कों के obverse पर मालव जाति का नाम न लिखकर प्रत्येक राजा का नाम खुदा है। इन सिक्कों से करीब 40 मालव राजाओं के बारे में पता चला है। Smith महोदय ने कुछ ऐसे सिक्कों की सूची दी है, जिसपर कोई लेख नहीं मिला है परन्तु बोधीवृक्ष की आकृति पाई जाती है। इन पर नन्दी की मूर्ति भी मिली है। Reverse पर कहीं-कहीं नन्दी की मूर्ति मिली है इस प्रकार हम बनावट के विचार से इन सिक्कों को भी मालव सिक्का ही कह सकते हैं।